डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

स.अ. / 16 / 14 /

26 अप्रैल 2021

प्रेस विज्ञप्ति
नरेंद्र कोहली की स्मृति में ऑनलाइन शोकसभा

नई दिल्ली, 26 अप्रैल 2021, साहित्य अकादेमी द्वारा हिंदी के प्रख्यात कथाकार नरेंद्र कोहली के निधन पर उनकी स्मृति में आज एक ऑनलाइन शोकसभा का आयोजन किया, जिसमें हिंदी के विभिन्न साहित्यकारों द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पहलुओं को याद करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनके निधन से हिंदी साहित्य–संसार ने भारतीय संस्कृति के एक सच्चे और मुखर प्रवक्ता को खो दिया है। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों के लिए जब भी हमने उन्हें याद किया, वे सदैव हमारे लिए उपलब्ध रहे। उनका निधन हम सबके लिए एक अपूरणीय क्षति है।

कमलकिशोर गोयनका ने कहा कि नरेंद्र कोहली आधुनिक समय के तुलसीदास के रूप में मान्य हैं। वास्तव में वे भारतीय मन के सर्वाधिक सशक्त लेखक थे। बल्देवभाई शर्मा ने कहा कि उन्होंने जो साहित्य रचा, वह लोकोपकारी था। मानवीयता, राष्ट्रबोध, सांस्कृतिक चेतना और व्यंग्यदृष्टि से संपन्न उनका साहित्य विरल है। दयाप्रकाश सिन्हा ने उनके साथ अपने पचास वर्षों के संबंधों का हवाला देते हुए कहा कि राष्ट्रवादी लेखकों की पंक्ति में नरेंद्र कोहली अग्रणी थे। सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि वे संपूर्ण भारत, भारतीय संस्कृति और भारतीय अस्मिता के लेखक थे। उनका जाना भारतीय साहित्य की मनीषा का नुकसान है। अनामिका ने कहा कि परंपरा एक ऐसी बैटरी है, जिसे सदैव नए सॉकेट के चार्ज करने की जरूरत होती है और नरेंद्र कोहली ने प्राचीन कथाओं के पुनर्लेखन के माध्यम से यही काम किया। अनंत विजय ने कहा कि मुझे उनमें कबीर के तत्व ज्यादा नजर आते हैं। वास्तव में तुलसी और कबीर की चेतना के समन्वित व्यक्तित्व के रूप में उन्हें मूल्यांकित करने की जरूरत है। चित्रा मुद्गल ने कहा कि उनको खोना मेरे लिए एक पारिवारिक मित्र को खोना है। उनकी विभिन्न कृतियों को संदर्भित करते हुए उन्होंने 'तोड़ो कारा तोड़ो' को उनकी अप्रतिम कृति के रूप में याद किया। दिविक रमेश ने कहा कि वे एक अनुशासित शिक्षक थे। पुराकथाओं से इतर उनके लेखन पर भी बात होनी चाहिए और उनका समग्र मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मंजुला राणा ने कहा कि मैं नरेंद्र कोहली को सांस्कृतिक राष्ट्रवादी लेखक के रूप में स्वीकारती हूँ। भारतीय साहित्य ने उनके निधन से एक युगपुरुष खो दिया है। इस अवसर पर प्रेम जनमेजय, बुद्धिनाथ मिश्र, नंदकिशोर पांडेय और चित्तरंजन मिश्र ने भी उनसे जुड़े संस्मरणों को साझा करते हुए उनके कृतित्व और योगदान की चर्चा की और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा के अंत में सचिव, साहित्य अकादेमी ने कहा कि हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रमेश उपाध्याय, मंजुर एहतेशाम और सुरेश गौतम को भी हमने खो दिया है। उन्हें भी साहित्य अकादेमी की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in